MA Semester II

Paper 5, unit III 17/2/2025

Topic- Development of Concept Formation or attainment of Concepts

प्रत्यय का विकास या निर्माण या प्राप्ति

प्रत्यय का विकास, निर्माण या प्राप्ति में वस्तुओं की अनेकानेक विभिन्नताओं की उपेक्षा करते हुए उनमें कार्यात्मक समानता या समरूपता की विशेषता की पहचान करना आवश्यक होता है। इस पहचान में भाषा का महत्त्व अत्यधिक होता है क्योंकि भाषा से वस्तुओं या घटनाओं के वर्ग का बोध होता है जैसे 'मनुष्य' एक शब्द है जिससे गोरा-काला, सुंदर-कुरूप, नाटा-लंबा प्राणियों का बोध होता है इसी प्रकार 'पशु' एक शब्द है जिससे गाय, बैल, कुत्ता, भैंस आदि जानवरों का बोध होता है। यहाँ स्पष्ट है कि शब्द प्रतीक (Symbol) के रूप में प्रत्यय का काम करता है।

प्रत्यय की प्राप्ति अथवा निर्माण में पृथक्करण की प्रक्रिया का होना आवश्यक है। पृथक्करण से तात्पर्य वस्तुओं या घटनाओं में विद्यमान सुविशिष्ट विशेषता को पृथक करने से है। जब सुविशिष्ट विशेषता को पृथक कर लिया जाता है, तो प्रत्यय की प्राप्ति अर्थात निर्माण हो जाता है।

प्रत्यय को सीखने में सामान्यीकरण (Generalization) तथा विभेदीकरण (Discrimination) दो प्रकार के संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ हैं।

सामान्यीकरण में जब प्राणी किसी वस्तु के प्रत्यय को सीखता है तो वह उस वस्तु के प्रति होने वाली प्रतिक्रिया को दूसरी वस्तुओं के प्रति भी करने लगता है जैसे बंदर प्रत्यय को सीखने के पश्चात एक बच्चा कुत्ता, बिल्ली आदि पशुओं को भी बंदर कहकर पुकार सकता है। विभेदीकरण (discrimination) द्वारा प्राणी भिन्न-भिन्न वस्तुओं के अंतरों को समझ सकता है वह बच्चा बाद में चलकर कुत्ता, बंदर, बिल्ली आदि पशुओं के बीच अंतर को समझने लगता है। इस अंतर के समझने के पश्चात उसमें सही प्रत्यय का विकास होता है।

प्रत्यय विकास से संबद्ध दो पहलू पहचान (identification) तथा प्रत्याशा (anticipation) होते हैं।

पहचान के द्वारा वस्तुओं को किसी वर्गविशेष में रखा जाता है जैसे मनुष्य, चौपाया, स्तनधारी आदि। किसी वस्तु को किसी विशिष्टवर्ग के सदस्य के रूप में पहचान करने के फलस्वरूप उस वस्तु की उस वर्गविशेष के साथ identity (तादात्म्य) करने में अनिश्चितता नहीं रह जाती है।

प्रत्यय का दूसरा पक्ष प्रत्याशा (anticipation) है इसके द्वारा यह ज्ञान किया जाता है कि यदि कोई वस्तु किसी वर्गविशेष की है तो उसमें अमुक-अमुक विशेषताएँ भी होंगी। जैसे जब हम किसी पशु को हाथी के वर्ग में रखते हैं तो यह भी प्रत्याशा करते हैं कि वह पशु एक विशालकाय तथा अति शक्तिशाली होगा। उसके लम्बी सूंड होगी

मोटे-मोटे पैर होंगे, सूप के समान दो कान होंगे तथा उसपर सवारी की जा सकती है। इसी प्रकार यदि कोई डॉक्टर किसी रोगी की जाँच कर यह पता लगा ले कि उसे टायफाइड हुआ है तब डॉक्टर यह भी प्रत्याशा करने लगता है कि उसके रोग में कौन-कौन से लक्षण होंगे और किस प्रकार की चिकित्सा से तथा कितने समय में रोगी का रोग से मुक्ति मिलेगा।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट है कि प्रत्यय के विकास में वस्तुविशेष की पाई जा सीम विशेषता (critical) के आधार पर वर्गविशेष में वर्गीकृत किया जाता है जिसे पहचान कहते हैं। तथा उसकी विभिन्न संभावित विशेषताओं की प्रत्याशा भी की जाती है।

Kumar Patel
Maharaja College, Ara